वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अप्रैल – 2024

- ❖ भगवान देवात्मा के प्रातः काल के साधन
- ❖ नीच अनुराग और नीच घृणा मूलक महा विनाशकारी नीच गतियां और उन के महा भयानक फल।
- ❖ देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा पति पत्नी के सम्बन्ध में आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन
- ❖ देव समाज की एक मात्र सत्य, विश्वव्यापी और विज्ञान–मूलक धर्म शिक्षा के मूल तत्व
- ❖ देव समाज उत्सव, संगरूर
- ❖ भाव प्रकाश
- ❖ पाठकों के विचार

भगवान देवात्मा के प्रातः काल के साधन

(ज्येष्ठ स. 1962 वि.)

मैं बहुत सवेरे अर्थात् कई घड़ी रात रहे, उठकर जो कई एक साधन करता हूं, वह यह हैं:

(1) अपने जीवन व्रत को सदा उत्फुल्ल और उन्नतशील रखने के निमित्त, अपने जीवन व्रत संबंधी संगीत का विचार पूर्वक बहुत देर तक गान, और विश्व के चारों विभागों के संग अपने एकता प्रतिपादक संबंध के विषय में साधन।

(2) अपने जीवन व्रत की सिद्धि के लिए जिन अनुकूल सामग्रियों और घटनाओं की आवश्यकता है, उनकी प्राप्ति के सम्बन्ध में शुभ कामना का साधन।

(3) अपनी कुशल और आने वाली मृत्यु के संबंध में कई एक आवश्यक साधन।

(4) अपने परलोकवासी संबंधियों के संबंध में शुभ कामना का साधन।

(5) अपने इस पृथ्वी में वर्तमान पारिवारिक जनों के संबंध में शुभ कामना का साधन।

(6) देव सामज के विविध कार्यविभागों के संबंध में चिन्तन और उनकी उन्नति आदि के विषय में शुभ कामना का साधन।

(7) देव समाज के कितने ही जनों के लिए शुभ कामना का साधन।

*(8) किसी धर्म मूलक विषय पर चिन्तन का साधन।

*(9) अपने दैनिक विविध कार्यों के विषय में चिन्तन का साधन।

(10) वर्तमान यज्ञ के संबंध में चिन्तन और शुभ कामना का साधन।

(11) "अहानि शम्भवन्तु" आदि मन्त्र का पाठ करके आने वाले दिन और रात्रि को सब प्रकार से कल्याणकारी होने के निमित्त शुभ कामना का साधन।

(12) किसी विशेष घटना और कार्य के संबंध में शुभ कामना का साधन।

---

* संभव है, कि किसी दिन यह दोनों साधन प्रातःकाल के समय नहीं हुए हों।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)

Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh

Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

धर्म जीवन

खण्ड 35 अंक 4
अप्रैल – 2024
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

नीच अनुराग और नीच घृणा मूलक महा विनाशकारी नीच गतियां और उन के महा भयानक फल।

अहं अनुराग ।

अहं अनुराग क्या? अपनी शक्ल सूरत, अपनी चाल ढाल, अपने स्वभाव अपनी राय, अपनी समझ, अपने मत और अपने विश्वासों आदि का अनुचित प्यार वा उन की बेजा तरफदारी।

कोई जन जहां तक अपने भीतर कोई उच्च वा कल्याणकारी बोध रखता है, और उसके द्वारा वह नेचर के किसी विकास कार्य में जहां तक सहायक प्रमाणित होता है, वहां तक उस जन का अपनी किसी उच्च शक्ति को प्यार करना, उसके आधार पर अपने तंई (उस शक्ति से खाली जनों की अपेक्षा) बढ़िया वा सौभाग्यवान बोध करना और किसी उच्च कार्य के लिए अपने भीतर पवित्र जोश और उत्साह महसूस करना और यथा अवसर ऐसा हि प्रकाश करना और अपने ऐसे किसी उच्च वा हितकर भाव में नाना प्रकार की विरोधता के आने पर भी सदा दृढ़ रहना अहं अनुराग नहीं है, बल्कि एक वा दूसरे पहलु में सच्चाई और भलाई का प्रकाश और उस का साथ देना है, कि जो किसी मनुष्य के लिए बहुत बड़ी बरकत और सौभाग्य की वस्तु है। अब केवल यही नहीं कि हर पहलु में ऐसा महा सौभाग्य सिवाए देवात्मा श्री देवगुरु भगवान के मनुष्य जगत् के किसी मनुष्य को भी प्राप्त नहीं है, बल्कि उन में ऐसे जन भी दुर्लभ हैं कि जो किसी एक पहलु में भी अपने हृदय में सत्य और हित मूलक कोई उच्च अनुराग रखते हों। इसलिए करोड़ों मनुष्य सत्य वा हित विषयक किसी उच्च अनुराग से खाली रहकर और अहं वा "मैं" के अनुरागी बनकर अपने लिए और औरों के लिए नाना प्रकार की ऐसी महा भयानक हानियां उत्पन्न कर रहे हैं, कि जिस का दृश्य बहुत दर्दनाक वा शोचनीय है।

यूं तो प्रत्येक नीच अनुराग ही मनुष्य के लिए महा विनाशकारी हैं, परन्तु यह अहं अनुराग एक एक आत्मा की जैसी मत मार देता है, जिस प्रकार उस की मट्टी पलीद करता है और उसे बुरी तरह तबाह और बर्बाद करता है, हां और तो और यह नीच अनुराग जीवन दाता देवात्मा के सर्वोच्च और मुख्य सम्बन्ध में भी जैसा कुछ फितूर डाल देता है, उसका मुकाबला किसी भी और नीच अनुराग से नहीं हो सकता। निश्चय किसी मनुष्य

के लिए इस नीच अनुराग का मानसिक वा हार्दिक सच्चा बोध लाभ करना अत्यन्त कठिन वस्तु है। एक एक जन मोटे मोटे पाप कर्म छोड़ सकता है, साधारण लोगों में अच्छा भला मानस आदमी कहला सकता है, एक-2 जन धन छोड़ सकता है, बीवी बच्चे छोड़ सकता है, घर बार छोड़ सकता है, तन का त्याग कर सकता है, और एक वा दूसरे उच्च भाव से चारों जगतों के लिए सेवाकारी भी बन सकता है, परन्तु अहं अनुराग के विनाशकारी शिकंजे से नहीं निकल सकता। तब किसी भी सच्चे धर्म अभिलाषी जन के लिए इस महा नीच अनुराग का सच्चा ज्ञान लाभ करना और उससे मोक्ष लाभ करने के योग्य होना जिस कदर नितान्त आवश्यक वस्तु है, उसका अनुमान किया जा सकता है।

एक एक अहं अनुरागी जन अपने अहं के वशीभूत होकर अपने और औरों के सम्बन्ध में क्या क्या नीच गतियां ग्रहण करने के लिए मजबूर होता है, और अपने जीवन में नाना समयों में किस-किस प्रकार के घाटे में रहता है, वह मोटे तौर पर यह है:

एक एक अहं अनुरागी जन,

1- नाना नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से मोक्ष और नाना सात्विक शक्तियों में विकास लाभ करने के संबंध में अपने भीतर कोई संग्राम महसूस नहीं करता और अपने आप में सन्तुष्ट रहता है।

2- अहं अनुराग मूलक वा किसी और नीच अनुराग मूलक अपनी नीचताओं और अपराधों को अपने सामने लाने का सुयोग पाकर भी उन्हें सामने नहीं ला सकता और अपनी ऐसी अवस्था को प्रकृत रूप में सामने लाकर उसे घृणित रूप में नहीं देख सकता। और न ही अपने नाना अपराधों का सच्चा परिशोध करने के लिए तैयार हो सकता है।

3- अपने आप को एक वा दूसरे पहलु में ऐसा बढ़िया, ऐसा सुन्दर, ऐसा तजुर्बेकार, ऐसा दाना, ऐसा होशियार और ऐसा शक्तिमान अनुभव करता है कि जैसा वास्तव में वह नहीं है। अर्थात् एक वा दुसरे पहलू में अपने वजूद, अपने गुणों और अपने कामों की उचित से बहुत ज्यादा कीमत लगाता है और उसकी अपेक्षा एक-2 पहलु में जो दरअसल बढ़िया वजूद हैं, उन्हें घटिया महसूस वा प्रकाश करता है।

4- आप अपनी झूठी तारीफ़ करके वा औरों से सुनकर खुशी लाभ करता है वा अपने आप में फूलता है।

5- एक एक भले काम के सम्बन्ध में अयोग्य होकर भी अपने आपको योग्य जाहिर करता है।

6- जो काम नहीं जानता, उन में भी एक-2 बार ख़्वामख़ाह दख़ल-अन्दाजी करता है और अपने तईं ऐसा प्रगट करता है कि जैसे वह उस काम को जानता है।

7- अपने किसी पाप कर्म को अनुभव करने के योग्य होकर भी अपनी हेठी होने के भय से वा किसी सज़ा के डर से उसे स्वीकार नहीं करता।

8- अपने किसी दोष वा अपराध के विषय में और तो और अपने किसी हितकारी वा परम हितकारी से भी कोई बात सुनना वा कोई फटकार सहना गवारा नहीं करता।

9- औरों की निन्दा करता है अर्थात् बिना किसी उचित कारण वा शुभ उद्देश्य के औरों की किसी सच्ची वा झूठी हीनता या नीचता का वर्णन करता है और ऐसा करके अपने आप में

बहुत आराम महसूस करता और फूलता है।

10 - इस नीच अनुराग के बहुत बढ़ जाने पर औरों की खूबियां वा अच्छे कामों का ज़िकर तक पसन्द नहीं करता और इसलिए जहां कहीं ऐसा मौका होता है वहां ख़्वामख़ाह दूसरे को हेठा जाहिर करने के लिए उसके किसी सच्चे वा झूठे अवगुण का वर्णन करना शुरू कर देता है।

11 - इस नीच अनुराग के बहुत बढ़ जाने पर औरों की खूबियों को देख वा सुनकर अपने आप में सुकड़ता है वा अपने हृदय में जलन और दुख अनुभव करके उसके सम्बन्ध में नाना प्रकार के हानिकारक कर्म करने के लिए तैयार हो जाता है।

12 - अपनी अपेक्षा किसी और जन का किसी सदगुण के विचार से आगे बढ़ जाना पसन्द नहीं करता।

13 - किसी अच्छे प्रबन्ध का साथ नहीं दे सकता और जो कुछ अपना जी करे (वह चाहे कैसा भी अनुचित हो) उसी की पैरवी करना चाहता है और किसी उच्च कार्य के सम्बन्ध में भरोसे के लायक, सेवाकारी अंग नहीं बन सकता।

14 - औरों का उचित सम्मान नहीं कर सकता, बल्कि नाना सम्बन्धों में बहुत निकम्मेपन और गुस्ताख़ी का प्रकाश करता है।

15 - जो बात उस की अपनी समझ वा भावों से अतीत (परे) हो, उसे किसी और के जीवन में सम्भव होने पर भी असम्भव महसूस करता है; और किसी तरह मानने के लिए तैयार नहीं होता।

16 - अपने स्वभाव, चालढाल, समझ, राय और विश्वास आदि के विरूद्ध कोई स्वभाव, चालढाल, समझ, राय और विश्वास आदि रखने वाले जनों को (चाहे वह उस की अपेक्षा कितने हि बढ़िया वजूद हों) घृणा करता है।

17 - सदा इस बात का आकांक्षी रहता है कि जिन जनों के साथ उसका वास्ता पड़े, वह औरों की अपेक्षा उस की तरफ अधिक ध्यान दें और उसका अधिक आदर सम्मान् करें (चाहे वह इस का अधिकारी न भी हो)

18 - अपने विरुद्ध मत प्रकाश करने वालों वा अपने किसी अपराध पर रोक टोक करने वाले जनों को शत्रु की दृष्टि से देखता है (चाहे वह उस का केवल हित ही चाहते हों)

19 - अपनी अवज्ञाओं को मानना नहीं चाहता और उनकी पोषकता में झूठी दलीलें देता है और जहां कहीं अपनी किसी अवज्ञा वा अपने किसी अपराध के स्वीकार करने के लिए लाचार हो जाता है वहां पर अपने आप में बड़ा जिचविच होकर उसे स्वीकार करता है।

20 - अपने नाना अवगुणों को सदगुणों के रूप में और औरों के नाना सदगुणों को अवगुणों के रूप में देखता और प्रगट करता है।

21 - नाना धर्म बोधों के विचार से और तो और एक एक बार अपने आप को सत्य और हित स्वरूप देवात्मा से भी बढ़िया अनुभव और प्रकाश करता है।

22 - किसी बड़े की गलती को देख कर उसकी खिल्ली उड़ाता है। और किसी मामूली बात में उसकी अपेक्षा बढ़िया होने की सूरत में अपने आप को बहुत बढ़िया और उसे तुच्छ देखता है।

23 - आत्मा के विचार के दिनों दिन अधिक अंधा, रोगी और कठोर बनता जाकर उच्च जीवन में विकास लाभ करने के अधिक से अधिक अयोग्य बनता जाता है और आत्मिक विनाश की नाना प्रकार की महा हानियों का ज्यादा से ज्यादा

भागी होता जाता है।

24 - और तो और परम हितकर्ता देव रूप धारी देवात्मा की ओर से भी अपने किसी अपराध के विषय में कुछ रोक टोक हासिल करने पर बजाय इसके कि उनके लिए अपने आप को कृतज्ञ अनुभव करे और अपने परम हितकर्ता को धन्यवाद दे, उलटा उन से रूठ जाता है और उनका मुंह तक देखना नहीं चाहता और उनके प्रति महा विनाशकारी घृणा भाव को बढ़ाकर मानों अपनी आत्मिक खुदकुशी करने के लिए तैयार हो जाता है, और अपने जीवन में नाना प्रकार के मोटे - 2 पापों से बचा रहकर और कई अच्छे भाव भी अपने भीतर रखकर अहं अनुराग के इस महा विनाशकारी जहर से ऐसा पागल और कोढ़ी बनता है और इस तौर पर सड़ गल कर विनष्ट होता है जिस का दृश्य अत्यन्त भयानक है।

ओह! अहं अनुराग का कैसा महा भयानक अंजाम!!

काश कि हम लोग देवात्मा की देव ज्योति में अपने अहं अनुराग की अत्यन्त भयानक और महा विनाशकारी छवि को उज्जवल रूप में देख सकें और उससे उद्धार लाभ करने के सच्चे साधनों में प्रवृत हो सकें।

मान बढ़ाई और प्रशंसा अनुराग ।

मान बड़ाई और प्रशंसा अनुराग क्या? दूसरों से ताज़ीम वा इज्ज़त लाभ करने की प्रबल लालसा। मान बड़ाई का अनुराग और दूसरों से वाहवा वा तारीफ़ लाभ करने की प्रबल लालसा प्रशंसा का अनुराग कहलाता है। हित और सत्य अथवा हित और सत्य स्वरूप देवात्मा की पैरवी करने से किसी जन को औरों की ओर से जो कुछ उचित सन्मान वा तारीफ़ मिले, वह बेशक आला चीज़ है और कोई जन जहाँ तक दूसरों की ओर से नाहक बेइज्ज़त किए जाने वा फटकारे जाने से अपनी उचित रक्षा करता है, वहां तक उसकी यह कोशिश निश्चय सराहनीय है। और इसके भिन्न यह बात भी सच है, कि इन भावों से परिचालित हो कर जहां तक कोई जन किसी मिथ्या वा अहित मूलक पतनकारी गति से बचा रहता है, वा किसी हितकर कार्य में सेवाकारी बन जाता है, वहां तक उससे उसे अपनी निर्माणकारी शक्ति की रक्षा में एक हद तक सहायता ज़रूर मिलती है, और वह जन उन जनों की अपेक्षा अवश्य बेहतर दर्जे का मनुष्य होता है, कि जो किसी भाव से भी दूसरों के एक वा दूसरे हित में कुछ काम नहीं आते। हां जब तक किसी मनुष्य में आत्म विकासकारी नाना उच्च भाव वा उच्च अनुराग पैदा न हों, और वह उनके द्वारा नेचर के विकास कार्य में निष्काम रूप से सहायक बनने के योग्य न बन सकें, तब तक उसका अन्य पूर्ण स्वार्थ परायण मनुष्यों की अपेक्षा मान बड़ाई वा प्रशंसा के भाव से ही किसी हितकर काम में सहायक बन जाना हज़ार दर्जे बढ़कर मुबारक बात है। परन्तु किसी मनुष्य का इन नीच भावों का अनुरागी बनना उसी तरह महा विनाशकारी प्रमाणित होता है, जिस तरह काम, स्वाद, धन आदि अन्य नीच भावों का अनुराग विनाशकारी है।

मान बढ़ाई और प्रशंसा के अनुरागी बन कर नाना जन क्या - 2 नीच गतियां ग्रहण करने के लिये मजबूर होते हैं, वह मोटे तौर पर यह हैं:

नाना जन मान बड़ाई वा इज्ज़त प्राप्ति विषयक नीच अनुराग के गुलाम होकर : -

1 - अपनी झूठी तारीफ़ करते हैं और औरों की निन्दा करते हैं तथा कई तरह के झूठ बोलते हैं।
2 - अपनी रहन सहन, पोशाक, बोल चाल लेख, दान पुण्य, साधन भजन और अनुष्ठान आदि के द्वारा अपने तईं ऐसा विद्वान, ऐसा धनी, ऐसा बलवान वा ऐसा श्रेष्ठ प्रगट करने का यत्न करते हैं, कि जैसा वास्तव में वह नहीं है।
3 - दूसरों की मांगी हुई वस्तुओं को झूठ मूठ अपनी ज़ाहिर करते हैं।
4 - बचपन में अपने बच्चे वा अन्य आश्रित जनों का विवाह कर देते हैं।
5 - विधवाओं के पुर्नविवाह में अनुचित रोक डालते हैं।
6 - विवाह और मृत्यु आदि के अनुष्ठान पर, वा रहने आदि के लिए कोई मकान खरीदने या बनवाने में अपनी हैसियत से बहुत ज़्यादा खर्च करके अपने लिए नाना प्रकार की माली मुसीबत खड़ी कर लेते हैं।
7 - अपने काम की रिपोर्ट देने वा अपनी हालत बताने में जान बूझ कर मुबालगे से काम लेते हैं।
8 - सरकारी हुकम से तारीफ और सन्मान लाभ करने के लिए कई प्रकार के अनुचित खर्च और औरों की झूठी तारीफ़ वा निन्दा करते हैं।
9 - अपने किसी दोष वा अपराध को अपने किसी हितकर्ता के सामने भी ठीक ठीक ज़ाहिर करने के स्थान में कुछ का कुछ ज़ाहिर करते हैं।
10 - अपने किसी अपराध का जहां और जिस के सामने ज़ाहिर करना आवश्यक वा कल्याणकारी हो, वहां भी चुप रहते हैं।
11 - जिन से वह अनुचित रूप से मान बड़ाई वा इज्ज़त लाभ करना चाहते हों, वह यदि उनकी इस इच्छा को पूरा न करें, तो उन पर नाराज़ होते हैं, वा उन पर झूठे इलज़ाम लगाते हैं, वा उनकी एक वा दूसरी अनुचित हानि करने के लिए तैयार हो जाते हैं।
12 - ऐसे जनों को अपना शत्रु अनुभव करते हैं जो उन का सच्चा दोष उन पर प्रगट करके उन्हें उस हालत से निकालने का यत्न करते हों।
13 - अपने एक - 2 हितकारी पर उस समय नाराज़ होते है जब वह उन्हें मान बड़ाई वा प्रशंसा के नीच अनुराग से निकालने की खातिर जान बूझ कर उनकी किसी प्रशंसनीय बात की प्रशंसा नहीं करता।
14 - वह किसी हितकर काम को इसलिए छोड़ देते हैं, कि अन्य लोग उस काम के लिए उनकी तारीफ़ नहीं करते वा जितनी तारीफ़ वह चाहते हैं, उतनी नहीं करते वा इससे भी बढ़कर उनकी अप्रशंसा करते हैं।
15 - ऐसे अंधे हो जाते है कि जिन कामों के लिए उन पर फटकार पड़नी चाहिए, उनके लिए भी तारीफ़ लाभ करने की आकांक्षा वा कोशिश करते हैं।
16 - वह इसी बिना पर ही किसी जन को अपना नज़दीकी वा हितकारी सम्बन्धी समझते हैं, कि वह उनकी अच्छी आवभक्त वा तारीफ़ करता है, चाहे यह सब कुछ मिथ्या और अहित पर आधारित ही क्यों न हो और फिर इसी बिना पर किसी जन को अपना शत्रु अनुभव करते हैं कि वह उन की इच्छा के अनुसार उनकी तारीफ़ नहीं करता चाहे वह उनका कैसा हि बड़ा हिताकांक्षी क्यों न हो।
17 - वह औरों की अनुचित खुशामदें करते हैं।
18 - वह सच्चाई और भलाई के पैमाने को छोड़कर अपने वा किसी और के किसी आचरण वा काम

को केवल इसीलिए अच्छा महसूस करते हैं कि उसके लिए साधारण लोगों की तरफ से उसे सम्मान् मिलता वा तारीफ़ मिलती है, और किसी जन के आचरण वा काम को केवल इसीलिए बुरा महसूस करते हैं कि उसके लिए साधारण जनों से उसे अपमान मिलता वा अप्रशंसा मिलती है।

19 - वह तब तक अपने किसी कार्य को निष्फल अनुभव करते हैं जब तक उन्हें उस काम के लिए मान बड़ाई वा प्रशंसा प्राप्त न हो। चाहे वह काम अपने तौर पर कैसा ही भला क्यों न हो।

20 - वह किसी एक वा दूसरे मौके पर अपनी वाजिब हेठी वा अप्रशंसा होने के भय से भी इतना सदमा लाभ करते हैं, कि वह उसे किसी तरह सह नहीं सकते; और उसके सदमे से नाहक नाना रोगों में फंस जाते हैं वा खुदकुशी का महा पाप करके ख़त्म हो जाते हैं वा अपने आत्मिक जीवन के विचार से इतने दुर्बल हो जाते हैं कि वह फिर अपनी उपरोक्त प्रकार की किसी नीचता को अपने सन्मुख लाकर उस पर पशेमान होने और उसका उचित परिशोध करके आत्मा को पवित्र करने की कोई हिम्मत नहीं रखते, और घुल घुल कर कुछ काल में पूर्णत: नष्ट हो जाते हैं।

ओह! मान बड़ाई वा प्रशंसा विषयक नीच अनुरागों की गुलामी का कैसा खतरनाक वा दुखदाई अंजाम!! पाठक गण! हम लोगों को देवात्मा की देव ज्योति में अपनी प्रकृत अवस्था को ठीक तौर पर अपने सामने ला कर यह देखने की ज़रूरत है, कि हमारे हृदयों में कहां तक उपरोक्त नीच अनुरागों का अधिकार वर्तमान है? और फिर जहां तक उनका अधिकार दिखाई दे, वहां तक देवात्मा का देव तेज पाकर उद्धार लाभ करने की नितान्त आवश्यकता है।

काश! कि हम लोग इस पहलु में उचित ध्यान दे सकें, और मोक्ष और विकाश विषयक सच्चे साधनों में प्रवृत होकर अपने सच्चे खैरख्वाह प्रमाणित हो सकें।

देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा पति पत्नी के सम्बन्ध में आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन

वेदान्त दर्शन की यह शिक्षा है कि यह जगत पूर्णत: मिथ्या है और इस जगत में माता पिता, भाई बहन, पति पत्नी, पुत्र, पुत्री आदि के नाम से जो जो जन मनुष्य के सम्बन्धी कहलाते हैं, वह सब सम्बन्धी और अन्य सब पदार्थ उनके लिए ऐसे हैं कि जिन के साथ सम्बन्ध रखने से मनुष्य को विभिन्न प्रकार के दुखों की प्राप्ति के भिन्न, अपने मरने के बाद किसी मनुष्य व पशु व वृक्ष आदि के रूप में इस पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ता है। इसलिए मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने सम्बन्धों का पूर्णत: त्याग कर दे और उनके भले व बुरे से पूर्णत: उपराम हो जाए, क्योंकि किसी भी अस्तित्व के साथ सम्बन्ध रखकर मनुष्य जो भले या बुरे कर्म करता है, उनका फल भोगने के लिए उसे पुर्नजन्म के चक्कर में पड़कर विविध प्रकार के दुखों को पाना पड़ता है। इसलिए यह कहा गया है कि मनुष्य अपने प्रत्येक सम्बन्ध में अपने भले बुरे कर्मों की ओर से उदासीन बन जाए।

किसी भी धर्म मत की ओर से सुख दुख

के आधार पर सम्बन्धों को काटने की यह जो शिक्षा है, वह बहुत भयानक है। मनुष्य का मुख्य लक्ष्य आत्मा का मोक्ष और विकास है। उसके लक्ष्य में यदि कोई सम्बन्ध बाधक है, तो वह त्याज्य है, किन्तु जहां भी किसी सम्बंधी से दुख मिला, उसे काट देना, किसी तरह भी उचित नहीं।

भगवान देवात्मा ने सम्बन्ध तत्व की शिक्षा दी है और उसमें बताया है कि नीच भावों को मुख्य रखकर मनुष्य जो सम्बन्ध बनाता है, वह उसके लिए अन्ततः हानिकारक प्रमाणित होते हैं और उच्च भावों के आधार पर मनुष्य जो सम्बन्ध स्थापन करता है, वह उसके लिए आखिरकार लाभदायक प्रमाणित होते हैं।

भगवान देवात्मा सच्चाई और भलाई के पूर्ण अनुरागी हैं और झूठ और बुराई के पूर्ण वैरागी हैं। उनके भीतर देव ज्योति और देव तेज का प्रकाश और विकास हुआ है। अपने देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न देव प्रभावों के द्वारा मनुष्य के विविध सम्बन्धों में उसके नीच भावों के कारण जो नारकीय अवस्था फैली हुई है, उसको दूर करके मनुष्यों में श्रद्धा, कृतज्ञता सेवा आदि के उच्च भाव पैदा करके उनके सम्बन्धों को हितकर और स्वर्गीय बनाया है।

पति पत्नी का सम्बन्ध गृहस्थ जीवन की बुनियाद है। इस सम्बन्ध में भगवान देवात्मा ने जो आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन पैदा किए हैं, उसके कुछ दृष्टांत नीचे दिए जाते हैं।

<u>पत्नी जो पहले अभिशाप थी, वरदान बन गई।</u>

एक जन भगवान की सेवा में लिखते हैं - मैं इस बार जब अपने घर गया तो यह देख कर हैरान हुआ कि मेरी वही पत्नी जो आपकी शरण में आने से पहले चाहकर और कई बार न चाहकर मेरे लिए इतनी दुखदाई प्रमाणित होती थी कि उसके पास एक दो दिन के लिए भी ठहरना मुझे दूभर मालूम होता था और एक - एक समय मेरे दिल में यहां तक ख्याल आता था कि मैं हमेशा के लिए उससे अलग हो जाऊं, परन्तु अब उसके पास ठहर कर न केवल यह कि कोई ऐसी दिक्कत नहीं पड़ी, बल्कि मुझे इतनी खुशी मिलती रही है कि जिसका ब्यान नहीं हो सकता। देव प्रभावदायक संगत में रहकर ही उसमें यह हितकर तबदीली आई है। वह अपने दिन भर के कामों और व्यवहारों से ऐसे असर डालती रही हैं कि मैं आपको धन्यवाद देने के लिए मजबूर होता रहा हूं। मैंने यह महसूस किया कि आपने सचमुच मेरी धर्म पत्नी की काया पलट दी है और जिसे मैं पहले अपने लिए मुसीबत समझता था, अब उसे मददगार और साथी महसूस करता हूं।

<u>मैं तो अपनी पत्नी के सम्बन्ध में एक हिंसक पशु था।</u>

एक और जन लिखते हैं - मेरी धर्म पत्नी एक गरीब घराने की थीं और मैं अमीर घराने का था, इसलिए एक समय ऐसा था जबकि मैं उन्हें अपना जीवन साथी महसूस करने की बजाए अपने आपको बहुत बढ़िया और उनको बहुत तुच्छ समझता था, और उन पर बहुत अत्याचार करता था। हम दोनों बहुत दुख की जिन्दगी बसर कर रहे थे। एक एक बार एक घर में रहकर भी कितने कितने ही महीनों तक हम आपस में बातचीत तक नहीं करते थे। मैं नीच उनको बहुत तंग करता था। उन्हें बहुत पीटता था और कई बार उनको ऐसा मारता था कि वह बेहोश हो जाती थीं। उनके दांतों और नाक से खून बहना शुरू हो जाता था। ऐसे समय में उनकी मौत हो जाने के डर से मैं मारना बंद करता था। अब

देवात्मा की रौशनी में अपनी ऐसी दरिन्देपन की हालत को देख कर बहुत दुखी होता हूं। हाय! मैंने इस अबला को बहुत सताया है अब भगवान देवात्मा की कृपा से हमारे परिवार का उपरोक्त प्रकार का नारकीय और घिनौना दृश्य बदल गया है और हम बहुत सुख और शान्ति की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं।

अब मेरी धर्म पत्नी ने सुख की सांस ली है

सम्बन्ध तत्व के शिक्षक भगवान देवात्मा ने अपनी अमूल्य देव ज्योति का दान देकर बहुत से अधिकारी जनों पर सम्बन्ध तत्व का यह भेद प्रगट कर दिया है कि सम्बन्धों में ही जीवन हैं और सम्बन्धों में ही मृत्यु है। इस हकीकत को जानकर उनके बहुत से सेवकों ने उनकी शिक्षा के अनुसार चलकर अपने विविध कड़वे और हानिकारक सम्बन्धों को मीठे और हितकर सम्बन्ध बनाने का सौभाग्य लाभ किया है। पति पत्नी के सम्बन्ध में पाठ और विचार का साधन करते हुए श्रीमान हीरानन्द जग्गी लिख्ते हैं - मेरे परम पूजनीय भगवन्! पति और पत्नी के सम्बन्ध में पूजनीय देव शास्त्र में से आदेशों का मैंने दो बार पाठ किया है। आपकी नायाब शिक्षा और आपके श्रेष्ठ दृष्टांत से मेरे इस सम्बन्ध में जो हितकर तबदीली आई है, उसे सम्मुख लाकर धन्य - धन्य होता हूं और आपको धन्यवाद देता तृप्त नहीं होता। मेरे अन्दर अभी जो बहुत कमियां और त्रुटियां हैं, उन्हें सामने लाकर दुखी और शर्मसार होता हूं और अपने भीतर बेहतरी लाने के फिकर में हूं। एक समय था कि आपकी शरण में आने से पहले मेरी पत्नी को मेरी तरफ से जूतों और मुक्कों से मार पड़ती थी। मैं उनको बहुत गन्दी गालियां देता था और एक एक बार जलती लकड़ी से उन पर हमला करता था। कोई दिन खाली नहीं जाता था कि जब हमारे घर में यह नारकीय लीला पैदा न होती हो। हमारा घर साक्षात नरक बना हुआ था। मैं अपनी पत्नी को पांव की जूती ख्याल करता था और उनके साथ मित्रवत सम्बन्ध महसूस नहीं करता था। अब आपकी कृपा से हमारे घर की वर्तमान अवस्था कुछ और है। उसमें जमीन आसमान का अन्तर आ गया है। जिन हाथों से मैं अपनी पत्नी को मारता और हर तरह से दुखी किया करता था, अब उन्हीं हाथों से उनकी बीमारी में बरसों सेवा करता रहा हूं। उनका पेशाब और पाखाना उठाता रहा हूँ। डाक्टरों से उनका इलाज कराता रहा हूं। और अपने हालात के अनुसार पैसा खर्च करता रहा हूं। इससे कुछ अन्दाजा हो सकता है कि हजूर ने मेरी गृहस्थ की कड़ी जिन्दगी में किस कदर बेहतरी और स्वर्गीय तबदीली पैदा कर दी है। काश! कि मुझे सदा आपका दर प्राप्त रहे और मैं आपका पल्ला पकड़े रहूं।

मैं अभी तक अपनी अयोग्यता के कारण आपके अति हितकर और निराले आदेशों के अनुसार अपनी पत्नी के साथ मित्रवत सम्बन्ध नहीं बना सका हूं परन्तु यह सच है कि आप ने मेरे हाथ से वह हथियार छीन कर परे फैंक दिए कि जिनके द्वारा मैं अपनी पत्नी को मारता और पीटता था। मेरे हाथ से ऐसे हथियारों के छूट जाने से मेरी पत्नी को एक हद तक सुख पहुंचा है और वह पहले की तुलना में अच्छे सुख की जिन्दगी प्राप्त कर सकी हैं। अब हम साधारणत: बगैर किसी लड़ाई झगड़े के जीवन व्यतीत करते हैं। मगर मैं आपकी रोशनी में यह भी देखता हूं कि हम दोनों के पुराने बुरे स्वभाव के कारण अब भी हमारी आपस में टकराहट हो जाती है और मैं अपनी पत्नी को झाड़ देता हूं, तो यह भी सच है

कि पहले की तुलना में हमारे सम्बन्ध में बहुत बड़ा अन्तर है। मैं महसूस करता हूं कि बहुत काल तक फटे हुए दिलों में उच्च प्रेम का आ जाना कोई आसान बात नहीं है। हमारे हृदयों की बहुत मैली हालत को सुन्दर अवस्था में लाने के लिए बहुत अधिक संग्राम और साधनों की आवश्यकता है। हम दोनों के हृदयों की अवस्था में इतना भी शुभ परिवतन आ जाना आपके देव प्रभावों का एक करिश्मा है। आप जिस उच्च अवस्था में हमें पहुंचाना चाहते हैं, उसके विचार से मैं अभी बहुत नीचे पड़ा हूं। अभी तक अपनी पत्नी के लिए मुझे जितना सम्मान रखना चाहिए, वह नहीं रखता। ऐसी हालत पर मुझे बहुत अफसोस होता है। यह कोई कम करामात नहीं है कि आपकी कृपा से हमारा कलह क्लेश का सिलसिला प्राय: बन्द हो चुका है और आस-पास के बहुत से लोगों की तुलना में हमारा सम्बन्ध बहुत बेहतर अवस्था में है। मैं इस दान के लिए आपको बार-बार धन्यवाद देता हूं। अब कई सालों से हम दोनों बहुत हितकर मेल की हालत में और खुश रहते हैं, मानों गृहस्थ आश्रम में हमें अब प्रवेश करने का सौभाग्य मिला है। हमारे जीवनों में ऐसा उच्च परिवर्तन आना सचमुच एक चमत्कार है, जिसका कर दिखाना नेचर ने देवात्मा के लिए ही संभव रखा था मैं ऐसी कामना करता हूं कि मुझे सदा देवात्मा के दर पर पड़े रहने का सौभाग्य प्राप्त रहे।

मैंने अपने बुरे व्यवहारों के लिए अपनी धर्मपत्नी से माफी मांगी

एक जन लिखते हैं- आज से दस ग्यारह वर्ष पहले जब मेरी नई शादी हुई थी, तब मैं अपनी धर्म पत्नी को इसलिए तंग करता था और मारता पीटता था कि उसके माता पिता धनी क्यों नहीं हैं? उन्होंने बिरादरी की रस्म के अनुसार खूब धूम धाम से अच्छी शादी नहीं की थी। वह बेचारी अबला मेरे मारने पर और अपने शरीर में अच्छी ताकत रखने पर भी कभी हाथ से तो दर किनार अपनी जुबान के द्वारा भी कभी मुकाबला नहीं करती थी। देवात्मा सतगुरू के देव प्रभावों को पाकर अपनी यह घटिया अवस्था अब मुझे बहुत बुरे रूप में सामने आकर दुखी और शर्मसार कर रही है। अब कई साल से उन्हें मारने पीटने का सिलसिला तो बन्द हो चुका है, मगर अपने अन्दर नीच घृणा का भूत वर्तमान होने के कारण छोटी-छोटी बातों पर अब भी मैं उनसे नाराज हो जाता हूं। उन्हें झिड़कना तो एक मामूली बात है। इस सिलसिले को बन्द करने और उसमें बेहतरी लाने का धक्का लगा है। पहले जब कभी रात को सो जाता और वह मुझे जगा कर दूध आदि देती, तब मैं नींद के सुख में विघ्न पड़ जाने के कारण क्रोध से परिचालित होकर उन्हें हजार हजार सलवातें सुनाता था। एक बार उन्होंने मुझे जगा कर चाय पिलाई, परन्तु उस समय उन पर नाराज होने की बजाए मैंने उन्हें स्नेह और हमदर्दी से भर कर कहा - ओहो! अभी तुमने अपना काम खत्म नहीं किया! तुमको बड़ी तकलीफ है और बड़ा काम करना पड़ता है। सलवातें सुनने की बजाए यह सलूक पाकर वह हैरान रह गईं और कहने लगी कि मैंने तो बहुत डर-डर कर आपको जगाया है कि कहीं नाराज़ न हो जाएं। अपनी धमपत्नी के इन शब्दों ने मेरे दिल पर बहुत असर किया और मैंने अपने पहले अनुचित व्यवहारों के लिए उनसे तहे दिल से क्षमा मांगी। मेरे इस नए प्रकार अच्छे बर्ताव से वह बहुत हैरान हुईं और उनका दिल पवित्र खुशी से भर गया। अपनी मजलूम धर्म-पत्नी के सम्बन्ध में मेरी यह तबदीली देवात्मा के देव प्रभावों का एक अजीब करिश्मा है।

देव समाज की एक मात्र सत्य, विश्वव्यापी और विज्ञान – मूलक धर्म शिक्षा के मूल तत्व

1 – विश्व

विश्व जो कि जड़ और शक्ति संयुक्त सब प्रकार के अस्तित्वों का समूह है, वह :

(1) नित्य और स्वयम्भू है;

(2) अपनी ही शक्तियों के द्वारा सदा परिवर्तित होता रहता है, जिससे उसके किसी भाग में उच्च व विकासकारी और किसी में पतन वा विनाशकारी परिवर्तन होता है;

(3) एक वा दूसरी अटल विधि के अनुसार परिवर्तित होता है, जिसे उसका अटल नियम कहते हैं;

(4) एक मात्र सत्य अस्तित्व है, इसलिए मनुष्य के लिए जहां तक और जो कुछ सत्यज्ञान लाभ करना सम्भव है, उसकी वही एक मात्र सत्य और अटल अभिव्यक्ति है।

2 – मनुष्य

मनुष्य का अस्तित्व जिन दो वस्तुओं से संयुक्त है, उनमें से एक उसकी गठन प्राप्त जीवनी शक्ति है, जिसे आत्मा कहते हैं, और दूसरी उसका गठन – प्राप्त भौतिक खोल है, जिसे शरीर कहते हैं।

मनुष्य के अस्तित्व में उसका यह आत्मा : –

(1) उसके भौतिक शरीर का निर्माता, रक्षक, परिचालक, और उसके अस्तित्व में मुख्य और सार वस्तु है;

(2) अपने भौतिक शरीर के बिना जीवित नहीं रह सकता;

(3) आवश्यक बातों के पूरा होने पर अपनी स्थूल देह की मृत्यु के अनन्तर, उसी के सदृश्य एक सूक्ष्म भौतिक शरीर निर्माण करने की सामर्थ्य रखता है, और उसके द्वारा पहले की न्याईं फिर जीवित शरीरधारी बन जाता है;

(4) विश्व के परिवर्तनकारी महा नियम के अधीन है : और अपने वा विश्व के अन्य अस्तित्वों के सम्बन्ध में अपनी आन्तरिक चिन्ताओं और बाह्यक क्रियाओं की उचित वा अनुचित गतियों के अनुसार उन्नति वा पतन वा मृत्यु लाभ करता है;

(5) अपनी भाव शक्तियों के द्वारा परिचालित होता है, और उसकी मान्सिक और शारीरिक शक्तियां, उन भाव शक्तियों के अधीन चलकर, केवल उनकी सहाय करती है;

(6) अपनी नाना भाव शक्तियों से परिचालित होकर अपने नाना सम्बन्धों मे नाना प्रकार की उचित वा अनुचित क्रियाएं करता है;

(7) अपने किसी नीच भाव का दास होने पर, जान बूझ कर भी, एक वा दूसरे प्रकार की नीच गतियां करने के लिए मजबूर होता है;

(8) अपने किसी नीच भाव के दासत्व वा इस दासत्व – मूलक किसी नीच गति से उस समय तक उद्धार नहीं पा सकता, और किसी नए सात्विक उच्च भाव को अपने भीतर विकसित नहीं कर सकता, जब तक कि उसे किसी ऐसे जन के उच्च प्रभाव यथेष्ट मात्रा में प्राप्त न हों, कि जो उस में ऐसा परिवर्तन उत्पन्न करने की सामर्थ्य रखता हो और वह स्वयं उसके उन

प्रभावों को ग्रहण करने की भी योग्यता रखता हो।

3 – मनुष्य का मुख्य और परम आवश्यक कर्तव्य

मनुष्य का यह परम आवश्यक और मुख्य कर्तव्य है, कि वह,

(1) अपने आत्मा के गठन और उसकी उन्नति, अवनति और मृत्यु के अटल नियमों के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करे;

(2) अपनी आत्मिक गठन के विषय में अज्ञान और मिथ्या विश्वासों और अपने नीच भावों के पतनकारी दासत्व से मोक्ष लाभ करे;

(3) अपने आत्मा में उच्च जीवन उत्पादक उच्च वा धर्म शक्तियों को उत्पन्न और उन्नत करे;

(4) इन उद्देश्यों की सिद्धि के लिए सत्य उपाय ग्रहण करे।

4 – देवात्मा

श्री देवगुरू भगवान् देवसमाज के संस्थापक और विज्ञान-मूलक धर्म के सत्यों के प्रकाशक हैं, और अपने सर्वोच्च और पूर्ण गठन प्राप्त आत्मा के कारण देवात्मा हैं। उनका आविर्भाव मनुष्य जगत् में, उसके विकास क्रम में हुआ है, और उन्होंने अपने आत्मा में

(1) हित और सत्य विषयक सर्वांग अनुराग, और

(2) अहित और मिथ्या विषयक सर्वांग विराग देव शक्तियां, विकसित की हैं, और उनके विकास के लिए उन्होंने सब प्रकार का आवश्यक पूर्ण त्याग किया है, और उन्हें विकसित करके उन्होंने अपने आत्मा में

1- एक ऐसी अद्वितीय देव ज्योति लाभ की है, कि जो अधिकारी जनों में प्रवेश करके, उनकी योग्यता के अनुसार, उनके आत्मिक अन्धकार को दूर करके, उन्हें उनके हानिकारक एक वा दूसरे प्रकार के मिथ्या विश्वासों और एक वा दूसरे प्रकार की नीच क्रियाओं को उनके प्रकृत रूप में दिखाती है, और उन्हें अपने आत्मा के रूप और उसके जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में नाना सत्यों के देखने के योग्य बनाती है, और

2- एक ऐसा अद्वितीय देवतेज लाभ किया है, कि जो अधिकारी जनों में प्रवेश करके उनकी योग्यता के अनुसार उनके हृदयों में जहां एक ओर उनकी एक वा दूसरी नीच क्रिया के लिए घृणा वा दु:ख उत्पन्न करके, उससे उन्हें मोक्ष देता है, वहां दूसरी और उनमें एक वा दूसरा परहित विषयक सात्विक भाव जाग्रत और उन्नत करता है।

श्री देवगुरू भगवान् अपनी इन अद्वितीय देव शक्तियों और उनके द्वारा विश्व के विकासकारी कार्य के साथ एकता स्थापन करने के कारण सब अधिकारी जनों के लिए :

(1) एक मात्र सच्चे, विश्वव्यापी और विज्ञानमूलक धर्म के शिक्षक वा गुरू हैं;

(2) एक मात्र सच्चे और सर्वोच्च उपास्य देव हैं;

(3) आत्मा के गठन, उसके जीवन, और उसकी मृत्यु के सम्बन्ध में अज्ञान और मिथ्या विश्वासों और नीच भावों और उनके विकारों से एक मात्र सच्चे और सर्वोच्च मोक्ष दाता हैं;

(4) उच्च वा धार्मिक जीवन के एक मात्र सच्चे और सर्वोच्च विकासकर्ता हैं।

देव समाज उत्सव, संगरूर

देव समाज उत्सव संगरूर में 8, 9, 10 मार्च, 2024 को मनाया गया। इसमें शामिल होने के लिए 40 के करीब धर्म संबंधी चण्डीगढ़, बठिंडा, पंचकूला, गोनियाना, कल्याण, गंगानगर, गजसिंहपुर, पदमपुर, मल्लेकां, केसूपुर आदि स्थानों से पधारे। 20 - 30 लोकल जन भी सभाओं में शामिल होते रहे। सभाएं श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान, पंडित राधेश्याम जी, श्रीमान सरताज सिंह जी, श्रीमान सुखदेव जी जोसन और श्रीमान गौतम जी ने करवाई। उत्सव उच्च प्रभावशाली और हितकर रहा।

प्रवेश सभा, 8 मार्च, 2024

विषय : देव समाज का रक्षाकारी और विकासकारी देव प्रभावदायक मंडल।

सभापति : श्रीमान सरताज सिंह जी और श्रीमान सुखदेव जी जोसन

सबसे पहले सरताज जी ने बताया कि देव समाज अनोखी समाज है क्योंकि यहां देव प्रभावों की वजह से हानि परिशोध के दृश्य होते हैं। उन्होंने श्रीमान गंगा सिंह जी जैरथ की घटना बताई। उन्होंने बताया कि कैसे श्रीमान सेवा सिंह जी के जीवन में देव प्रभावों से परिवर्तन आया। श्री विक्रमादित्य जैन साधू की घटना की बताई गई। इसके बाद श्रीमान सुखदेव जोसन जी ने पटवारियों के जीवन में देव प्रभावों से जो परिवर्तन आए वह ब्यान किए।

9 मार्च , 2023

पहली सभा : देव समाज के चार महा लक्ष्य।

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

सभापति जी ने फरमाया कि भगवान देवात्मा के परम लक्ष्य में सेवाकारी बनने के लिए देव समाज के चार महा लक्ष्य हैं। सबसे पहला लक्ष्य मिथ्या विश्वासों और मोटे पापों से बचाना वा मोक्ष देना। दूसरा महा लक्ष्य उच्च भावों को पैदा करना है। शिष्टाचार, श्रद्धा, कृतज्ञता, दया, हानि परिशोध पैदा करना। नेचर के संबंध में सत्य ज्ञान देना देव समाज का तीसरा महा लक्ष्य है। देवात्मा के संबंध में ज्ञान देना और देवात्मा के साथ जुड़ना और जोड़ना देव समाज का चौथा महा लक्ष्य है।

09 मार्च 2024, दोपहर 3.00 बजे।

सभापति : श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान।

विषय : इस लोकवासी और परलोकवासी सेवकों की देवसमाज लिए सेवाएं।

श्रीमान गुरूदेव राज जी ने 'करो कृपा मेरे भगवन' भजन गाया। सभापति जी ने बताया कि इस सभा हाल में जो छवियां लगी हुई हैं वो हमारी समाजिक वा अध्यात्मिक धरोहर हैं। देव समाज में दो प्रकार के सेवक हैं एक जो बाहर के वातावरण से आए हैं। दूसरे देव समाजी परिवारों से आए हैं। गीता हिन्दुओं का बहुत बड़ा ग्रंथ हैं। उसमें लिखा है साधुओं को तारणे के लिए, दुष्टों का नाश करने के लिए मैं युगों युगों में जन्म लेता हूं। देव समाज की Philosophy इसके बिल्कुल उल्ट है।

कनल जी और उनके सुपुत्र जी ने देव समाज का साहित्य लिखा है। साहित्य लिखकर सारी दुनियां में भेजा वा सेवा की है।

1) **श्रीमान राम सिंह जी** को श्रीमान बलदेव सिंह जी ने तिकोना मोती लिखा है। श्रीमान राम सिंह जी देवी की पूजा करते थे। पिता जी से लड़ते थे। उनके पैर पर जोर से सोटी मारी। शादी

के लिए पूजा पाठ करते थे। फिर शादी हो गई। शादी के बाद पत्नी पर बहुत जुल्म करते थे। एक बार खाना लेट हो गया, पत्नी को सोटी से पीटा। चोरी की फसलें काट लेते थे। मार - 2 कर पत्नी की पसली तोड़ दी। फिर देव समाज में आ गए। देव समाज के लिए दान इकट्ठा करने लगे। दान मांगना बहुत मुश्किल काम है। प्रतिदिन 5 - 6 घंटे 40 साल तक 50 हजार से अधिक दान मांगकर दिया। लोग उनका अपमान भी करते थे। पर उनकी सेवाएं देव समाज के लिए बेजोड़ हैं।

2 **कुंवर दविन्द्र सिंह जी :-** इनके यहां एक MLA रिश्तेदार शिकार खेलने आ गए। वो बताते थे कि मेरे हाथों पर खून लगा रहता था। Drawing room में लाशे टंगी रहती थी। बड़ी - 2 भट्ठियों में मांस पकता था। श्रीमान गुरसेवक सिंह जी की हितकर बातचीत से वो देव समाज के साथ जुड़ गए। वो धाएं मार - 2 कर रोते थे। बहुत ईमानदार बन गए। पहले पिता जी को सम्मान नहीं देते थे। देव समाज में आकर उनका बहुत भला हुआ। उनके परिवार का बहुत भला हुआ। देव समाज में आने से पहले पत्नी से भी संबंध बहुत खराब था।

3. **श्रीमान गिरधारी लाल जी :-** पहले से जीवन परिवर्तित हो गया। नकली शराब बनाते थे, नशे बेचते थे। बाद में सोलन में देव समाज की बहुत सेवा की।

4. **श्रीमान बुध सिंह जी :-** वह 20 साल तक अनपढ़ रहे थे। किसी रिश्तेदार के द्वारा देव समाज का पता लगा। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने देव समाज की अतुलनीय सेवाएं की। 1905 में विकासालय खोला। श्रीमान बुध सिंह जी पहले विकासार्थी बने। अम्बाला, बठिंडा, रावलपिंडी के क्षेत्र परिचालक बने। अनपढ़ होकर पढ़े लिखों में प्रचार करते थे। 20 जनों को देव समाज के साथ जोड़ा। आम दुनियां में पढ़े लिखे लोग Crime कर रहे हैं। इस प्रकार देव समाज से जुड़ने के लाभ ही लाभ हैं। श्रीमान धर्मपाल जी के संग्राम द्वारा फौज की प्रतिज्ञाओं में बदलाव किया गया।

*इस लोकवासी सेवकों की सेवाएं :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने प्रचार के लिए बहुत सेवा की है। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने चण्डीगढ़ में तीन स्कूल कॉलेज खोलने में बहुत बड़े संग्राम किए हैं। बहुत बड़ा प्रचार हाल खड़ा किया है। नए क्षेत्र पैदा किए हैं। डा. इकबाल सिंह जी बहुत बड़ी आयु में भी बहुत सेवा करते थे। सोलन में बहुत बड़ा काम किया। श्रीमान Y.P.S. Bhalla जी ने बहुत अच्छा मंदिर बनाया हुआ है। उनका परिवर्तन सुनाया गया। श्रीमान सीताराम जी का जीवन परिवर्तन सुनाया गया।

कुमारी नंदिता जी :- मेरे नाना जी की वजह से हमें ऐसी देव समाज की नींव मिली। नाना जी की टांग पर चोट लगी तो भी उन्होंने मांसाहार का प्रयोग नहीं किया। प्रतिज्ञा पर पक्के रहे। माता पिता जी का भी धन्यवाद किया कि वो देव समाज से जुड़े हुए हैं।

श्रीमान हरदेव सिंह जी:- हम परसों बैग खरीद रहे थे। दुकानदार ने गलती से दो बैग दे दिए, मैंने एक बैग गुरू महाराज की शिक्षा अनुसार वापिस कर दिया।

गृह प्रवेश शाम 5.00 बजे।

श्रीमान सीताराम जी की सुपुत्री के घर का गृह प्रवेश अनुष्ठान हुआ। श्रीमान नरेश जी के घर पर धर्म संबंधियों ने "शुभाकांक्षी सकल हमारे शुभ आशीष करो तुम दान।" भजन गाया। पारिवारिक परिचय हुआ। सबको अच्छा भोजन

कराया गया।

09 मार्च, 2024, रात्रि 8.00 बजे।

सभापति : श्रीमान राधेश्याम जी।

विषय : देव समाज से कटने की हानियां और इससे जुड़ने के लाभ।

श्रीमान गुरूदेवराज जी ने 'अद्वितीय है रूप तुम्हारा' भजन गाया। सभापति जी ने फरमाया कि नेचर तत्व से ही शुरूआत करनी चाहिए। नेचर के अन्दर कोई भी अस्तित्व दो चीज़ों से बना है जड़ और शक्ति। हर अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। हमारा अस्तित्व भी जड़ और शक्ति से बना है। हमारे अस्तित्व में शरीर और आत्मा है। शक्ति दिखाई नहीं देती। शक्ति का कारज हमें दिखाई देता है। नेचर में जीवनी शक्ति भौतिक जगत से उद्भिद, पशु और मनुष्य जगत में विकसित हुई है। नेचर वा विश्व नियमबद्ध है। नेचर में अटल नियम काम करते हैं। शरीर को जिन्दा रखने के भी नियम हैं। आत्मा को जिन्दा रखने के नियम हैं। मनुष्य को उसके भाव चलाते हैं। देवात्मा को देव शक्तियां चलाती हैं। आत्मा की खुराक देव प्रभाव हैं। विकासक्रम को समझे बिना हम देवात्मा को नहीं समझ सकते। सबसे पहले भौतिक जगत था फिर धीरे-2 उद्भिद जगत पैदा हुआ। धीरे-2 पशु जगत आया। फिर धीरे-2 मनुष्य का विकास हुआ। मनुष्य अपनी मानसिक शक्तियों के कारण चारों जगतों का मालिक बन गया। इन्सान अपना आप मालिक नहीं है। इन्सान को बाकी जगतों से कोई डर नहीं, उसे डर है तो इन्सानों से। इन्सानों का स्वभाव हैं सुख लाभ करना। इन्सानों ने धर्मों का, किस्मत का व लालचों का निर्माण किया है। प्रचलित धर्म बने ही सुख पाने और दुखों से बचने के लिए हैं। सुख अनुरागी होने के कारण इन्सान हानि करने के लिए बाध्य है। मनुष्य अपने और अपने नीचे के जगतों का शत्रु बना हुआ है। नेचर के विकासकारी विभाग ने मनुष्यात्मा से आगे देवात्मा को प्रगट कर दिया। 20 दिसम्बर, 1850 ई० को श्री अकबरपुर में देवात्मा का आविर्भाव हुआ। देवात्मा के अन्दर ही योग्यता है कि वो मनुष्यात्माओं को सुधारने की क्षमता रखते हैं। देवात्मा ने दावा किया है कि कोई भी जन जो मनमुख चाल छोड़कर मेरे साथ जुड़ेगा वह पहले से बेहतर हो जाएगा।

अगर किसी खेत का पानी के साथ संबंध होगा तो फसलें हो सकती है वरना नहीं होगी। अगर पानी की नाली खेत से काट देंगे तो फसल नहीं होगी। गुरू महाराज चारों जगतों का शुभ करते थे उनकी घटनाओं का वर्णन किया गया। सभापति जी ने देव समाज से जुड़ने के मोटे-2 पांच लाभों का वर्णन किया।

1) शारीरिक 3) पारिवारिक/आर्थिक
2) मानसिक 4) सामाजिक एवं
5) अध्यात्मिक लाभ

- ❖ देव समाज में आने से मिथ्या विश्वास चले जाते हैं। पैसों की बर्बादी, समय और शक्तियां मिथ्या में नष्ट होने से बच जाते हैं।
- ❖ दूसरा लाभ शरीर से स्वस्थ हो जाओगे। देव समाज के कर्मचारी 100-100 साल तक की उम्र पा जाते हैं।
- ❖ धन का लाभ होता है क्योंकि हम उसको कमाने व उनके उचित प्रयोग के नियम सीख जाते हैं।
- ❖ सामाजिक लाभ होता है। सदाचार पैदा हो जाता है। इन्सान भरोसे के योग्य बन जाते हैं।
- ❖ संबंधों में मेल आ जाता है।
- ❖ आध्यात्मिक विकास भी देव समाज में होता

है।

गुरू महाराज ने देव समाज का उद्देश्य क्या रखा है? देव प्रभाव पाना ही देव समाज का उद्देश्य है। देवात्मा की Philosophy एक Line में कही जा सकती है कि नीच जीवन से मोक्ष और उच्च भावों का विकास। सच्चाई और भलाई की गति करने से आत्मा का बल बढ़ता है। झूठ और बुराई की गति करने से आत्मा का पतन होता है।

विश्व के अंदर मनुष्य सबसे उत्तम प्राणी है फिर भी सबसे बढ़कर पापी भी मनुष्य ही बनता है। अच्छे काम भी मनुष्य ही करता है। धर्म का उद्देश्य क्या है इस बारे में ब्यान फरमाया कि जैसे शिक्षा का उद्देश्य नेचर के ज्ञान को हासिल करना है, इसी प्रकार नीच शक्तियों से हटना और उच्च भाव पैदा करना धर्म का उद्देश्य है। संबंध हमारे क्यों खराब हो जाते हैं - स्वार्थ और घमंड से सारे संबंध बिगड़ जाते हैं। श्रद्धा व कृतज्ञता से संबंध मीठे बनते हैं। जो देवात्मा से जुड़ जाएगा वह बेहतर हो जाएगा। जो कट जाएगा वह महा पतित हो जाएगा, टूट जाने से बहुत हानि होने लगती है। हम देव समाज से कट कर फिर उसी पतन की दिशा में चले जाते हैं। पं देव रतन जी और अब्बदुल गफूर की कट जाने की घटनाएं बताई गई।

10 मार्च 2023

पहली सभा : विजय पताका के संबंध में सभा।
सभापति : श्रीमान गौतम जी।

सभापति जी ने विजय पताका के रंगों का महत्व बताया। उन्होंने बताया कि नीला रंग देव ज्योति का प्रतीक है। पीला रंग देव तेज के हल्के प्रभावों का प्रतीक है जबकि लाल रंग देव तेज के ज़ोरदार प्रभाव का प्रतीक है। उन्होंने उदाहरण देकर बताया कि कैसे देव ज्योति से मिथ्या और पाप की गतियां दिखाई देती हैं और देव तेज से वो नष्ट हो जाती हैं। उन्होंने एक पटवारी की घटना बताई, डा. H.V. Sonpar जी की घटना बताई। उसके बाद सबने खड़े होकर विजय पताका का सम्मान किया और गीत का गान किया। फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने देव समाज में देव प्रभावों के कार्य का उदाहरण सहित वर्णन किया।

भाव प्रकाश

1) **श्रीमान राजेन्द्र जी, देहरादून :-** यहां आकर मुझे बहुत अच्छा लगा। श्रीमान सीता राम जी के परिवार से मिलकर बहुत अच्छा लगा। पहले मैं शराब पीता था। बच्चे ठेले पर सब्जी बेचते थे। अगर मैं शराब पीता रहता तो मेरे बच्चे चोर डाकू बनते। शराब, बीड़ी कल्याण सत्संग के प्रभावों से 10 - 15 साल पहले छोड़ दिया था। बिजली का काम करने लगा। मेरी श्रीमती जी ने मेरा साथ दिया।

2) **श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी, मल्लेकां :-** आपने एक घटना बताते हुए कहा कि सभा में अपनी कालिख दिखाई दी है। मैं श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और श्रीमान मेहर सिंह जी के लिए शुभकामना करता हूं। निन्दा, चुगली से बचने का प्रयास करूंगा।

3) **श्रीमान सरताज सिंह जी :-** देव समाज का धन्यवाद करता हूं कि अपने अन्दर देखने का अवसर इस सत्संग में मिलता है। श्रीमान सीताराम जी के परिवार का धन्यवाद करता हूं। जो धर्म संबंधी अपने साथ उच्च साथियों को लेकर आए हैं उनका धन्यवाद। सभाओं से बहुत लाभ हुआ। श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमती

सुरजीत बराड़ जी ने छोटे बच्चों की तरह हमें सम्भाला हुआ है। मेरे नानके और दादके परिवार को जो जट सिक्ख हैं उनको गुरू महाराज जी ने बचाया है। इस सत्संग में आकर पता लगा है कि परिशोध के साधन नहीं किए। मैं घमंड से बचूंगा। मैंने अपनी धर्म पत्नी जी और श्रीमान राधे श्याम जी से माफी मांगी। मैं अपनी माता जी का अधिक सम्मान करूंगा, (बहुत व्याकुल होकर) मैं परिशोध के बिना नकली सेवक हूं। मैं भविष्य में देव समाज की सेवा करूंगा।

5. **श्रीमान गुरदेव राज जी :–** श्रीमान नवजोत जी और उनके परिवार का धन्यवाद करता हूं। समाज में आने से पहले मैं बेईमान था। खेत में पानी की चोरी करता रहा हूं। मेरे श्रद्धेय पिता जी ने मेरी बेईमानी पड़ोसी को बता दी। मेरे पिता ईमानदर थे और मैं बेईमान था। यहां आकर दिखाई दिया है। कुछ दिन पहले सरकार ने कहा अगर धान नहीं बीजोगे तो पैसे मिलेंगे। पर मैंने बेईमानी नहीं की। मैंने अफसर को गुरू महाराज की शिक्षा के बारे में बताया कि हमारे गुरू कहते हैं कि मैं इस पृथ्वी पर स्वर्ग लाना चाहता हूँ। अफसर ने कहा कि यही स्वर्ग है। यह स्वर्ग नहीं तो क्या है?

6. **डा. सतिन्द्र ढिल्लों जी :–** मेरी यहां बहुत Care हुई है और ऐसे अच्छे और उच्च धर्म संबंधी मिले हैं। बड़े श्रीमान जी (बाई जी) की सेहत के लिए हम शुभकामना करें। शाम को जब हम भजन गाते हैं, तो हमारे साथ गाते हैं। जब सभा में बैठती हूं तो मुझे माता पिता के उपकार नज़र आते हैं। परलोकवासी धर्म संबंधियों का धन्यवाद करती हूं जिन्होंने माता पिता जी को समाज से जोड़ा है। ऐसी समाज मिली, समाज के स्कूलों, कॉलेजों में भी काम किया, पर अपना आप नज़र नहीं आया। अब कोशिश करूंगी। अब किताब तो पढ़ती हूं। सभाएँ बहुत अच्छी थी। अब मैं मल्लेकां सत्संग में जरूर आऊंगी। मैं College के प्रति परिशोध जरूर करूंगी। मैं अपने पिता जी की इच्छा पूरी करूंगी। 5000 इसी साल जमा करवा दूंगी।

7. **श्रीमती भजन कौर जी :–** मेरे अन्ध विश्वास से मुझे मेरे पिता जी ने छुड़वाया था। मेरे एक भाई (मुखत्यार सिंह) को दौरे पड़ते थे उनको धागे बांधते थे। कुते की गंदगी की धुनी देते थे। गरम चिमटे लगाकर जला दिया। खाने को कुछ नहीं दिया। मेरे अन्ध विश्वास चले गए। मेरे भाई बहुत अच्छे हैं।

8. **श्रीमान बूटा सिंह जी :–** श्रीमान सीता राम जी मेरे अच्छे दोस्त थे। श्रीमान सीता राम जी अपने भाईयों को भाई बहन ब्रत के समय खाना खिलाया करते थे। मैंने भी प्रण किया था। पर मैं फेल हो गया। अब मैं आगे से अपने भाईयों को चाय पानी पिलाऊंगा। अगर मैं फिर फेल हो गया तो जुर्माना दूंगा।

9. **श्रीमान धर्म सिंह चौहान जी :** – श्रीमान सीता राम जी की बेटी ने कोठी खरीदी है उसकी मुबारकबाद। वहां गृह प्रवेश के दौरान गुरू महाराज की कृपा महसूस हुई। हमारे परिवार में एकता नहीं हैं क्योंकि देव समाज हमारे परिवार में नहीं गई। मैं अपने परिवार (संयुक्त परिवार) में देव समाज की शिक्षा लेकर जाऊंगा। दूसरी प्रेरणा यहां से जो मुझे हुई है कि अब धर्म संबंधियों की धरोहर की रक्षा करूंगा। मैं उच्च आत्माओं की जीवनीयों को पढ़ा करूंगा।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सुझाव दिया कि श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान और श्रीमान राधेश्याम जी के यहां सत्संग हों।

एक धर्म सम्बन्धी का पत्र द्वारा भाव-प्रकाश

श्रीमान् सरताज जी के प्रति

(i) सन्मान के योग्य प्यारे धर्म सम्बन्धी, सत्य देव की जय।

मुझे आप जी से कुछ कारणों से दिल को कुछ तकलीफ पहुँची थी। वह तकलीफ कितने ही दिनों तक चलती रही। वह मेरे दिल को जलाती रही। अपनी उस जलन को दूर करने के लिए अपने आपको ठीक सिद्ध करता रहा व आपकी कमियाँ ढूँढ़ता रहा व बताता रहा। बेबसी की हालत में ऐसा सब करके, आपके अच्छे पक्ष को बिलकुल भुलाकर व अपनी तरफ कोई ध्यान न ले जाकर और अपने आपको ऊँचा मानकर अपना नाश करता रहा। अपना अहँकार बढ़ाता रहा।

(ii) मैं आपसे पढ़ाई में, पदवी में, हालात में और अन्य अनेक योग्यताओं और उपलब्धियों में दीन और हीन होकर भी आपके मुकाबले अपनी तुच्छता को बिलकुल भी अनुभव न कर सका। मेरा घमण्ड मुझे बेबसी की हालत में पहुँचा देता है, अपने खिलाफ कुछ भी सुनने के अयोग्य कर देता है। आप कई प्रकार के अच्छे गुणों से सुशोभित हैं, आपको उच्च पूँजी विरासत में मिली है। आपने कई प्रकार के उच्च कर्त्तव्यों को निभाया है और निभा रहे हैं।

नैतिक सिद्धान्तों के पालन के फलस्वरूप आपके जीवन में सुन्दर घटनाएँ देखी और सुनी हैं। मैं अपने आपको आपके रुतबे के सच्चे तुलनात्मक अध्ययन में बहुत निम्न स्तर का पाता हूँ।

धर्म सम्बन्धी होने के नाते, श्री देवगुरू भगवान के श्रद्धावान होने व सेवक होने के नाते सब धर्म सम्बन्धी मेरे बहुत सन्मान, श्रद्धा के योग्य हैं व मेरे उपकारी भी हैं।

आप जी को मेरी किसी प्रकार की बोल बाणी अथवा किसी प्रकार से कष्ट पहुँचा हो तो मैं उसे दीन होकर सुनना चाहुँगा और आभार मानूँगा।

आप जी को प्रणाम सहित।

सत्यदेव की जय

गोपाल कृष्ण

शुभ निमन्त्रण

जैसा कि धर्म सम्बन्धियों को पूर्वविदित है कि देव समाज मन्दिर मल्लेकां (सिरसा) में दिनांक 5, 6, 7 अप्रैल को पति पत्नी व्रत के उपलक्ष्य में सत्संग का प्रोग्राम रखा गया है। पूजनीय भगवान की सत्य धर्म शिक्षा में उन्हीं की प्रेरणा अनुसार अलग-अलग सम्बन्धों में उच्च प्रेरणादायी विषयों पर साधन एवं सभाएँ की जाती हैं जिनके फलस्वरूप अब तक अनेकों ही नर-नारियों में हितकर परिवर्तन पैदा हुआ है जिससे इस दुखमय संसार में स्वर्गीय अथवा हितकर-सुन्दर दृश्य पैदा होते रहे हैं। हम सभी सत्य धर्म के ऐसे उच्च वातावरण में सदा आमन्त्रित हैं।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाठकों के विचार

बहुत सन्मान के योग्य श्रीमती सुरजीत बराड़ जी,
सत्यदेव जी जय।

धर्म जीवन का मार्च 2024 का अंक प्राप्त हुआ। जिसे पढ़कर बहुत लाभ पहुँचा है। खासकर सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह के दोनों लेख (1) मुख्य साधन व (2) मेरे सौभाग्य या महा सौभाग्य यह बहुत प्रभावशाली लेख हैं। सच्चे व झूठे साधन और 'कल्याण में माता पिता सन्तान व्रत' का संक्षिप्त वर्णन व भाव प्रकाश पढ़कर भी मन वापिस Past में लौट गया। आप व मौसी सतिन्द्र कौर ढिल्लों जी बहुत संग्राम कर रहे हैं ताकि गुरू महाराज का कारज आगे बढ़ सके। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी अपनी धर्मपत्नी की सेवा के अलावा बहुत ज्यादा मेहनत से देवसमाज का कारज आगे बढ़ा रहे है। श्रीमान गौतम जी, श्रीमान राधेश्याम जी व श्रीमान धर्म सिंह चौहान जी भी बखूबी साथ दे रहे हैं। डा० नवजोत कालड़ा जी भी पूरे सहयोगी हैं। मुझे धर्म जीवन पढ़ने के बाद अपने अहं व नीच घृणा की तरफ ध्यान गया है व उससे मुक्त होने का बल व देव ज्योति प्राप्त हुई है आपका व बड़े श्रीमान जी का आर्शीवाद हमारे सर पर बना रहे यही दिली कामना है।

आभार सहित।
तुच्छ सेवक
(प्रिंसिपल सरताज जी)

मेरे बहुत ही सम्मान के योग्य श्रीमान जी,

आपने मुझसे मार्च 2024 के धर्म जीवन के बारे में पूछा है कि मुझे इससे क्या लाभ हुआ है? इसके बारे में पूरा-पूरा ब्यान तो नहीं कर सकता। जैसे कहे कबीर गूंगे गुड़ खाया, पूछे ते क्या कहिए वाली बात है। जिस प्रकार गूंगा आदमी मिठाई का पूरा-पूरा ब्यान नहीं कर सकता, उसी प्रकार मैं भी।

इस अंक में जितने भी लेख दिए गए हैं सारे एक से बढ़कर एक है। जो लेख 'मुख्य साधन' के हैंडिग से है उस लेख का मैं तीन बार लगातार पाठ कर चुका हूँ। इस लेख को मैंने अपनी साधन कापी में भी मोटे तौर पर लिख लिया है और मैं इस लेख को मुँह जुबानी याद करने की कोशिश में हूँ। बहुत ही उच्च प्रेरणाओं के ओत-पोत लेख है। हृदय को छू जाता है। मैं इस लेख को पढ़ते-पढ़ते ही बीसियों बार इसके लेखक माननीय श्रद्धा के योग्य श्रीमान जी को धन्यवाद कह चुका हूँ। लेखक के चरणों में बार-बार नतमस्तक हो रहा हूँ। आपका भी बहुत-बहुत आभारी हूँ। आपको धन्यवाद देता हूँ।

इस लेख को पढ़कर बार-बार साधन करने का मन बनता है। किसी और ही दुनियां के दर्शन होते हैं।

आपका अजीज
(श्रीमान सुखदेव जोसन)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts